ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 167-168
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

प्रसाद के कहानियों में नारी चित्रण

रेखा पन्त
शोध अध्येत्री– हिन्दी विभाग, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ0प्र0), भारत

Received-07.09.2023, Revised-15.09.2023, Accepted-20.09.2023 E-mail: Sujay01000@gmail.com

सारांशः ***छायावाद के आधार स्तम्भ जयशंकर प्रसाद अपने समृद्ध साहित्य सम्पदा के लिये जाने जाते हैं, लेखन की प्रत्येक विधा में उनका अविस्मरणीय योगदान है। तत्कालीन युग में कहानी के क्षेत्र में प्रेमचन्द्र और प्रसाद दो धुरियों की तरह निरंतर लिख रहे थे। दोनों ही अलग–अलग छोर के कहानीकार प्रतीत होते हैं। प्रेमचन्द्र का आदर्श जहाँ यथार्थ में तब्दील हो रहा था, वहीं प्रसाद अपनी कहानी ग्राम से लेकर सालवती तक कहीं भी समझौतावादी नहीं प्रतीत होते हैं। "आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य के निर्माताओं में अपने ढ़ग के विशेष कहानियाँ लिखने में उनका नाम ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टि से सर्वप्रथम आता है। एक ऐसे समय में जब हमारी कहानी की कोई निश्चित परम्परा नहीं, उसे साहित्यिक रूप नहीं मिल पाया था और उसकी शैली विषयगत को कोई आदर्श उपस्थित नहीं किया गया था, उस समय प्रसाद साहित्य के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए और उन्होंने समस्त अभावों की पूर्ति की"।[1] यद्यपि तत्कालीन कालानुसरण की आवश्यकता को देखते हुए उनकी कई कहानियाँ ऐतिहासिकता का आधार लेते हुए भी तत्कालीन भाव भूमि को छूती हैं।"***

कुंजीभूत शब्द– छायावाद, साहित्य सम्पदा, अविस्मरणीय योगदान, समझौतावादी, साहित्य, ऐतिहासिक, साहित्यिक दृष्टि।

प्रसाद जी का समकाल उनके अन्तर्जगत पर इतना हावी है कि अतीत भी वर्तमान से जुड़ जाता है। वह अपने वास्तवित अर्थों में समकाल की ही गाथा बन जाता है। अपने युग के समस्याओं और सन्दर्भों का संकेत जिस सूक्ष्मता और करीने के साथ प्रसाद की कहानियों में रूपायित होता है, उसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं है।"[2] उनकी कहानी का भाव पक्ष हो या कला पक्ष पाठक को उन तक पहुँचने के लिए एक सूक्ष्य दृष्टि की आवश्यकता होती है। "प्रसाद की छोटी कहानियॉ कोमल, कल्पना विशिष्ट, किन्तु उत्थानमूलक भावनाओं से भरी पड़ी हैं।"[3] प्रसाद मूलतः कवि थे–एक भावुक कवि। यही भावुकता उनकी कहानियों में भी दृष्टिगोचर होती है और कहानी में अद्वितीय नारी पात्रों की सृष्टि करती है। जयशंकर प्रसाद जिस युग के रचनाकर थे, उस काल खण्ड में नारियों की सामाजिक स्थिति अति दयनीय थी। स्त्रियों को उनके मूल अधिकारों से वंचित रखा गया था। समाज में उन्हें दोयम दर्जे का स्थान प्राप्त था। उनपर सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा जैसी अनेक सामाजिक कुरीतियों थोपी गयी थीं। सामाजिक समस्याओं से स्त्रियों की स्थिति को सुधारने के हेतु प्रसाद ने अपनी रचनाओं को माध्यम बनाया और समाज को स्त्रियों के महत्व और अस्तित्व की पहचान करायी। प्रसाद की नारी की अपनी अलग पहचान है। उन्होंने ऐसी नारी पात्रों की कल्पना की जो समाज में परिवर्तन लाना चाहती थी तथा नारी के अस्तित्व को स्थापित करना चाहती थी। प्रसाद के कथा में नारी कोमल भावों वाली है वहीं दूसरी ओर वह अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए विद्रोही स्वर मुखर करने से भी पीछे नहीं हटती है।

"एक खास प्रकार के नारी पात्रों की सृष्टि में प्रसाद जी अद्वितीय हैं, जो अपने निश्छल प्रेम, त्याग और बलिदान से पाठकों के मन पर अमिट प्रभाव छोड़ जाती हैं। आकाशदीप की चम्पा, देवरथ की सुमाता, पुरस्कार की मधुलिका आदि प्रसाद की अनुपम नारी सृष्टि है। नियति और समाज से एक साथ संघर्षरत नारी का ऐसा चित्रण दुर्लभ है।"[4]

प्रसाद की कहानियों में नारी जीवन के विभिन्न आयाम अलग–अलग रूपों में मिलते हैं, प्रेमिका, मॉ, मजदरू , रानी, पुत्री आदि नारी पात्र जहॉ एक ओर नव प्रस्फुटित पल्लवों से भी कोमल भावों से युक्त हैं, वहीं दूसरी ओर परिस्थितियॉ पड़ने पर वज्र से भी अधिक कठोर प्रतीत होती हैं। प्रसाद द्वारा नारी पात्रों का अपने साहित्य में सृजन करना और उनका चित्रण करना वस्तुतः सराहनीय कहा जा सकता है। श्री जयनाथ नलिन के अनुसार– "प्रसाद जी ने अपने ह्रदय की समस्त कोमलता, कल्पना की रंगीन, भावन की स्निग्धता, कला की सफलता नारी चरित्र के भव्य निर्माण में प्रयुक्त की है।" व्यक्तिगत भावना, नैतिकता, राष्ट्रप्रेम आदि के द्वंद में छटपटाती नायिकायें कर्तव्यशील हैं, वे अपने कर्तव्य पथ पर अविरल जलधारा की भॉति गतिशील हैं।

आधुनिक कथाकार राजेन्द्र यादव ने प्रसाद की कहानियों के नारी पात्र के विषय में लिखा है कि "द्वंद से छटपटाती और कर्तव्य की ओर झुकी हुई नायिकायें मनोविज्ञान की भाषा में एम्बिवैलेन्सी नामक मानसिक स्थित की शिकार होती हैं।" जिसमें एक ही वस्तु व व्यक्ति के प्रति प्यार और घृणा की समान तीव्र भावना होती है। यह भावना हमें आकाशदीप, पुरस्कार जैसे कहानियों में स्पष्टतः परिलक्षित होती है। पुरस्कार की मधुलिका अरूण को प्राणदण्ड मिलने पर पगली सी आ खड़ी हो जाती है और राजा द्वारा पुरस्कृत किये जाने पर स्वयं के लिए प्राणदण्ड मॉगती है। यह उसके व्यक्तिगत प्रेम व राष्ट्रप्रेम की चरम सीमा ही है जो उनसे कहलवाती है कि "मुझे भी प्राणदंड मिले"[5] उसके यह शब्द देश प्रेम व व्यक्तिगत प्रेम का सम्यक् निर्वाह करते हुए दोनों को समान महत्व देते हैं। यही स्थित आकाशदीप कहानी में चम्पा के अर्न्तद्वंद की है। वह अपने पिता से अगाथ प्रेम करती है और बुद्धगुप्त को अपना भावी जीवनसाथी मान चुकी है, परन्तु सन्दहे होने पर कि वह उसके पिता की हत्या में वह सम्मिलित था, घृणा से भर उठती है और उसे स्वीकार न कर द्वीप में रहकर विरक्त जीवन व्यतीत करने लगती है। वह अपने माता–पिता की याद में दीप जलाकर पथ से भटके हुए पथिकों को प्रकाश दिखाती है और स्वंय त्याग और समर्पण के द्वंद में दीपक की तरह जलती रहती है। वह बुद्धगुप्त से कहती है कि "विश्वास! कदापि नहीं बुद्धगुप्त! जब मैं अपने ह्रदय में विश्वास नहीं कर सकी उसी ने धोखा दिया, तब मैं कैसे कहूँ मैं तुमसे घृणा करती हूँ, फिर भी तुम्हारे लिए मर सकती हूँ। अन्धेर है, जलदस्यु, तुम्हें प्यार करती हूँ।[6]"

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

प्रसाद के साहित्य का आधार यद्यपि ऐतिहासिक रहा हो परन्तु उनके पात्र तत्कालीन चुनौतियों के अनुकूल हैं इसलिये आज भी प्रासंगिक हैं। प्रसाद युग पराधीन भारतवर्ष का काल था, जो स्वतन्त्रता के संघर्षों व गॉधी के आन्दोलनों से उद्वेलित था, तत्समय पुरूषों के लिए ही अपने कर्तव्यों का निर्धारण करना कठिन था और स्त्रियों के लिए तो यह चुनौतियॉ दुगुनी थी। इस प्रकार प्रसाद आज से एक सदी पहले अपने साहित्य के माध्यम से ऐसी नारी पात्रों को गढ़ रहे थे, जो आज के समय में भी प्रगतिशील व प्रासगिक प्रतीत होती है। प्रसाद के यह नारी पात्र स्वावलम्बी व स्वाभिमानी हैं। गुदड़ी के लाल कहानी की बुढ़िया सबसे यही कहा करती है "मैं नौकरी करूॅगी, कोई मेरी नौकरी लगा दे"[7] बुढ़िया की बेटी थी और वह भी कुछ धन कमा लेती थी, परन्तु बुढ़िया का विश्वास था कि कन्या का धन खाने से उस जनम में बिल्ली, गिरगिट और न जाने क्या–क्या होना पड़ेगा। बुढ़िया को अपने स्वाभिमान का पूर्ण विश्वास था। रामनाथ बनिया उसे अपने दुकान में दैनिक कार्य के लिए रख लेते हैं, और जब एक दिन बुढ़िया को मूर्छा आ जाती है, तब बनिया बुढ़िया को बिना काम किये पिन्सिन देने की बात करता है तो बुढ़िया का स्वाभिमान झनझना उठता है, वह कहती है मैं बिना किसी काम के किये इसका पैसा कैसे लॅूगी। स्वाभिमानी बुढ़िया का यह वाक्य पाठक के ह्रदय को झकझोर देता है। प्रसाद के पुरूष ह्रदय ने नारी की पीढ़ा, वेदना, समर्पण, विद्रोह, स्वाभिमान इत्यादि को जाना ही नहीं, अपितु ऐसा प्रतीत होता है कि उसे बहुत समीप से जिया है। नायिकाओं की छटपटाहट किसी न किसी रूप में उभरकर सामने आती है। समाज में नारी की विवश स्थिति, उसकी पीढ़ा तथा साथ ही प्रेम करने की अदम्य शक्ति समाज से विद्रोह कर उचित मार्ग में चलने की जिद उनके व्यक्तित्व को गुरूत्व प्रदान करती है। चन्दा कहानी में कोलकुमारी चन्दा द्वारा अपने प्रेमी को पति के रूप में चुनना नारी स्वतन्त्रता का प्रतीत है। वह अपने प्रेमी पति हीरा के लिए उसकी मृत्यु के बाद भी पूर्णतः समर्पित है। हीरा की मृत्यु के उपरान्त रामू से प्रतिशोध लेने के लिए वह उद्वगे से भर उठती है, प्रसाद लिखते हैं "वह उठकर पुच्छमर्दिता सिंहनी के समान तनकर खड़ी हो गयी और धीरे से कहा ..... यही समय है"[8] । भिखारिन कहानी में भिखारिन का स्वाभिमान देखते ही बनता है, वह भूखी है, गरीब है मगर उस पर व्यंग करने वालों को वह सीधा जवाब देती है कि "दो दिन मॉगने पर भी तुम लोगों से एक पैसा भी देते नहीं बना फिर क्यों गाली देते हो बाबू, फिर व्याह करके निभाना तो बड़े दूर की बात है।[9]" नूरी कहानी में देश प्रेम और व्यक्तिगत प्रेम के द्वंद को उभारा गया है। इस कहानी से राष्ट्र के लिए व्यक्तिगत प्रेम को न्यौछावर करने की प्रेरणा मिलती है। कई घटनायें व पात्र इतिहाससम्मत हैं और केवल नूरी काल्पनिक पात्र जान पड़ती है जो स्वाधीनता संग्राम के उस कठिन संघर्ष में एक उपयोगी सन्देश देती है।

पिछले कुछ वर्षों में कई विमर्श उभरकर आये हैं, जिसमें नारी विमर्श की भी खूब चर्चा रही है, इससे यह तात्पर्य नहीं है कि आज से पहले नारी विमर्श नहीं था, नारी विमर्श नारी की सृष्टि से ही था, परन्तु इसे प्रस्तुत करने का तरीका अलग था। प्रसाद के समकालीन अन्य रचनाकारों के साहित्य में भी स्त्री चित्रण देखा जा सकता है। महादेवी वर्मा के श्रृंखला की कढ़ियॉ नारी मुक्ति का गहन चिन्तन और विद्रोह का स्वर है, इसी प्रकार निराला, पन्त इत्यादि रचनाकारों की रचनाओं में भी नारी चित्रण देखा जा सकता है। प्रसाद ने पहली बार सामाजिक यथार्थ के भीतर मानसिक यथार्थ के महत्व को उभारा। उनकी नायिकाओं का मनोविषयक चित्रण आगे आने वाले रचनाकारों के लिए एक मनोवैज्ञानिक पथ सृजित करता है, जिसमें आगे चलकर इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, देवराज आदि ने अपनी रचनायें की। "नारी के व्यक्तित्व में ममता, श्रद्धा, त्याग, शक्ति और शौर्य और छल, घृणा, प्रपंच, ईर्ष्या विलास के विरोधी धाराओं का कभी अलग–अलग और कभी एक साथ गुमफन, प्रकृति और मानव के संघर्ष, संयोग का धूप–छांव अंकन, नियति के विधान और मानवीय प्रयत्न दोनों के सहयोग से मानव के उत्थान, पतन का चित्रण भौतिक उपादानों को आध्यात्मिक महिमा से मण्डित करने की अद्भुत कला, अमूर्त भावनाओं और मनोवृत्तियों को मूर्तिमत्ता प्रदान करने की क्षमता, प्रत्यक्ष और गोचर से परे, रहस्यमयी सौन्दर्य और सत्ता निरूपण के लिए प्रसाद चिर अमर रहेंगे।[10]" प्रसाद हिन्दी साहित्य के नक्षत्रलोक के चन्द्रमा हैं। उनकी कहानियॉ भारतीय संस्कृति, मर्यादा और नारी गौरव की प्रतिष्ठा करती हैं। काव्यात्मक भाषा आदर्श और यथार्थ का समन्वय पाठकों के मन में जादुई प्रभाव ड़ालता है। आधुनिकता के इस दौर में जब भी नारी विषयक विमर्शों की चर्चा की जायेगी, तो प्रसाद की नायिकाए नारी सशक्तीकरण के मूर्त रूप में प्रतिस्थापित होती रहेंगी। नारी की खोई हुई अस्मिता और गरिमा को पुनः प्रतिष्ठित करने की दिशा में प्रसाद के नारी पात्र एक ज्वलन्त उदाहरण हैं। अपने आत्म सम्मान व स्वाभिमान से भरी हुई, ये कालजयी नारी पात्र युगानुकरण की प्रवृत्ति रखती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य दुर्गा शंकर मिश्र, पृ0सं0 203.
2. जयशंकर प्रसाद–महान्ता के आयाम, डॉ0 करूणाशंकर उपाध्याय, पृ0 सं0 369.
3. हिन्दी साहित्यः बीसवीं शताब्दी–नन्ददुलारे बाजपेयी पृ0सं0 141.
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, सम्पादक डॉ0 नगेन्द्र, सह–संपादक डॉ0 हरदयाल, सं0 तृतीय, पृष्ठ संख्या 566.
5. आधी कहानी संग्रह, जयशंकर प्रसाद।
6. कथा सेतु–सं– डॉ0 उमाशंकर तिवारी श्रीमती माधुरी प्रु–सं–34.
7. प्रतिध्वनि कहानी संग्रह, जयशंकर प्रसाद।
8. छाया कहानी संग्रह, जयशंकर प्रसाद।
9. जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी संग्रह, पृष्ठ संख्या 48.
10. हिन्दी का गद्य साहित्य, रामचन्द्र तिवारी, सं–12वॉ, पृष्ठ 733.

*****